Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XI, Issue No. 22, July-2016, ISSN 2230-7540

मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के सन्दर्भ में गाँधी जी के विचार

Sangeeta*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

----------X----------

प्रस्तावना :–

मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के विकास के लिए इतने सजग, सक्रिय और व्यापक रूप से उपाय पहले कभी नहीं हुए हैं जितने बीसवीं शताब्दी में हुए। हमारी संस्कृति की हमेशा यह विशेषता रही है कि वह पुरूष प्रधाान रही। परिवार का स्वामी पुरूष ही हो सकता है। हमारे समाज और राष्ट्र के लिए भी 'पुरूष' शब्द का प्रयोग उसके संगठित स्वरूप के अर्थ में किया जाता है। महिलाएं अपनी युगों पुरानी रूढ़ दासता से कैसे छूटे? गांधी जी इस प्रश्न से अत्यन्त विहवल हो गये। भारत में कभी किसी संत ने स्त्री–पुरूष में भेद नहीं देखा। समय समय पर उन्होंने स्त्री के उद्धार के लिए प्रयत्न किये और संदेश दिये। उनके गौरव गरिमा को जीवन के प्रसंगों द्वारा प्रमाणित किया।

गांधी जी जैसे प्रगतिशील प्रखर दार्शनिक भी अपने आपको इस नारी चिंतन से अलग नहीं रख पाए और उन्होंने भी नारी से संबंधित विभिन्न आयामों पर अपना व्यापक दृष्टिकोण प्रकट किया। गांधी विचाराधारा में नारी की स्थिति पर जो भी विचार प्रगट किये गये हैं, उसका मूल बिन्दू नारी के प्राचीन परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर उसकी वर्तमान समस्याओं का हल प्रस्तुत करना। गांधी जी ने न केवल अपने सिद्धांतों के सन्दर्भ में नारी को ऊपर उठाना चाहा, वरन् उनकी दुर्दशा से उन्हें मुक्ति दिलाकर उन्हें आम पुरूष की भांति समानता तथा स्वतंत्रता की वकालत की। उन्होंने नारी के भीतर के सशक्त आत्मबल को पहचाना। उनकी कथन था –'स्त्री त्याग की मूर्ति होती है। जब वह कोई कार्य शुद्ध और सही भावना से करती है तो पहाड़ों को भी हिला देती है। हमने अपनी स्त्रियों का सही उपयोग नहीं किया है। शायद हमने उनकी उपेक्षा की है लेकिन मुझे जरा भी शक नहीं कि भारत की स्त्रियां पुरूषों का छोड़ा हुआ काम पूरा करेंगी और पुरूषों से कहीं अधिक खूबसुरती के साथ पूरा करेगी।''

स्त्री–पुरूष समानता के प्रश्न पर गांधी जी का विचार है कि 'जहां तक स्त्रियों के अधिकारों का सवाल है मैं कोई समझौता नहीं करूंगा। मेरी राय में, उन्हें ऐसी किसी कानूनी निर्योग्यता का शिकार नहीं बनाया जाना चाहिए जो पुरूष पर लागू नहीं होती। मैं बेटे और बेटियों के साथ बिलकुल एक जैसा व्यवहार करना चाहूंगा।''

गांधी जी का मध्यप्रदेश आगमन –

मध्यप्रदेश में महिला उत्थान के क्षेत्र में गांधी जी का म्ध्यप्रदेश आगमन महत्वपूण सिद्ध हुआ। गांधी जी जब 1920 में प्रथम बार म्ध्यप्रदेश आये तो उन्होंने महिलाओं की सभा को सम्बोधित कर उनमें राजनीतिक चेतना जागृत की। 1933 में अपनी द्वितीय मध्यप्रदेश यात्रा के दौरान उन्होंने महिलाओं को शिक्षा, समाज सुधार तथा अंधविश्वास निवारण का संदेश देकर उनका उत्साहवर्धन किया। म्ध्यप्रदेश में महिला उत्थान के लिए महात्मा गांधी का आगमन एक महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हुआ। महिलाएं न केवल गांधी जी के नेतृत्व में आगे आई, अपितु उन पर गांधी दर्शन का प्रभाव भी परिलक्षित हुआ जो उनके उत्थान में मील का पत्थर सिद्ध हुआ।

यह उल्लेखनीय है कि मध्यप्रदेश में अपने दूसरे प्रवास के दौरान गांधीजी ने रायपुर, धमतरी तथा बिलासपुर में विशेष रूप से महिलाओं की सभाओं को संबोधित किया। महिला उत्थान की दृष्टि से ये सभाएं महत्वपूर्ण कही जा सकती है। गांधी जी ने अपने उद्बोधन में महिलाओं को हरिजन फंड में दान देने के लिए ही प्रेरित नहीं किया, अपितु महिलाओं में सामाजिक जागरण का उत्साह भी पैदा किया। उनकी प्रेरणा से म्ध्यप्रदेश की महिलाएं समाज सुधार की दिशा में आगे बढ़ने लगी तथा राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भाग लेने लगी।

गांधी जी के विचारों का प्रभाव –

गांधीजी का भारत आगमन एवं उनका भारतीय राजनीति में प्रवेश भारत में महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक मील का पत्थर था। गांधी दर्शन में महिलाओं को समाज में पुरूषों के बराबर स्थान देने की वकालत की गई है तथा उन्हें स्वाधीनता आंदोलन में आगे आने का मार्ग भी प्रशस्त किया गया है। गांधी जी असहयोग आंदोलन के दौरान देश में जहां कही भी गये, उन्होंने अपने विचारों एवं जादुई व्यक्तित्व से महिलाओं को प्रभावित किया। बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में स्थापित विभिन्न महिला संगठनों का कार्यक्षेत्र एवं प्रभाव सीमित था, परंतु गांधी जी ने समाज की उच्च वर्ग की महिलाओं से लेकर वनांचलों में निवास करने वाली आदिवासी महिलाओं तक उत्साह का संचार करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। उनका मध्यप्रदेश आगमन तथा महिलाओं की सभाओं में दिये गये भाषण इस क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण के लिए प्रेरक तत्व बन गये। इस प्रकार

www.ignited.in

गांधी जी के प्रभाव से महिलाएं आर्थिक स्वालम्बन की ओर अग्रसर होने लगी। धमतरी के अतिरिक्त मध्यप्रदेश के अन्य स्थानों में भी महिलाआं ने बड़ी संख्या में चरखा कातकर महिला सशक्तिकरण की नींव रखी।

गांधी जी के विचारों से प्रभावित होकर म्ध्यप्रदेश की महिलाओं ने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेना प्रारंभ कर किया। असहयोग आन्दोलन के समय उन्होंने तिलक स्वराज फंड में दान देकर अपनी सक्रियता प्रदर्शित की। अनेक स्थानों में सामूहिक रूप से चरखा कातकर गांधी जी के ग्राम स्वराज की कल्पना को साकार किया तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सत्याग्रह के माध्यम से अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया। निःसंदेह महात्मा गांधी का म्ध्यप्रदेश प्रवास तथा उनके विचारों के प्रभाव से म्ध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होने लगा।

गांधी वादी नेताओं का योगदान –

म्ध्यप्रदेश का समाज मूलतः भाग्यवादी था। इस क्षेत्र में अंधविश्वास, अज्ञानता, तथा अकर्मण्यता आदि कुछ दोषों के रहते हुए भी अन्य विशेष गुण विद्यमान थे, जैसे सरलता, धर्मिकता तथा ईमानदारी। इन गुणों के आधार पर ही यह आशा थी कि यदि इस क्षेत्र की उन्नति के लिए प्रयत्न किए जाए तो शीघ्रातिशीघ्र सुधार किया जा सकता था। यहां का समाज विभिन्न मतावलंबियों, समाज– सुधारको तथा संतो के विचारों एवं कार्यो से प्रभावित रहा। कबीर के शिष्य धर्मदास के प्रयास से यहां कबीर पंथ का उद्भव एवं विकास हुआ। संत गुरू घासीदास की शिक्षाओं के कारण समाज के निम्न समझें जाने वाले समुदाय में जागृति आई। ब्रिटिश शासनकाल में नई प्रशासनिक व्यवस्था, शिक्षा का विकास, पश्चिमी विचारों का प्रभाव तथा यातायात की सुविधा के फलस्वरूप म्ध्यप्रदेश के सामाजिक जीवन में सुधार के लिए वातावरण निर्मित होने लगा। राजा राममोहन राय के ब्रम्हसमाज, दयानंद सरस्वती के आर्य समाज तथा महादेव गोविन्द रानाडे के प्रार्थना समाज का प्रभाव इस क्षेत्र तक फैलने लगा। भारत के राष्ट्रीय जागरण से भी म्ध्यप्रदेश अछुता नही रहा। कांग्रेस के संपर्क में आकर म्ध्यप्रदेश के अनेक नेताओं ने न केवल राष्ट्रवाद की भावना यहां फैलाई, अपितु समाज सुधार के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया। म्ध्यप्रदेश में समाज सुधार के लिए कार्य करने वाले नेताओं में पं. सुन्दरलाल शर्मा, वामनराव लाखे, डॉ. ई. राघवेन्द्र राव, ठाकुर प्यारेलाल सिंह, माधवराव सप्रे, तथा धनश्याम सिंह गुप्त आदि थे। इन नेताओं का नाम म्ध्यप्रदेश के राजनीतिक विकास में भी अग्रणी हैं। स्वतंत्रता संग्राम के साथ इन नेताओं ने समाज के उत्थान एवं महिलाओं की दशा में सुधार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया। इन नेताओं का यह मत था कि समाज सुधार के बिना लोंगों में राजनीतिक चेतना जागृत नहीं की जा सकती। अतः राजनीति जागृति के साथ– साथ समाज सुधार का भी प्रयास किया गया जिससे यह क्षेत्र राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ सके।

महिला उत्थान की दिशा में पं. सुंदरलाल शर्मा, पं. वामनराव लाखे, पं. माधवराव सप्रे तथा घनश्यामसिंह गुप्त ,द्वारा म्ध्यप्रदेश में किये गये कार्यों से यह मत व्यक्त किया जा सकता है कि स्वाधीनता आंदोलन के साथ– साथ पूरे देश में ही नहीं, अपितु म्ध्यप्रदेश में भी महिला उत्थान के लिए उल्लेखनीय कार्य किये जा रहे थे। विशेषकर महिलाओं को शिक्षित करने के लिए पाठशालाओं की स्थापाना इन नेताओं ने की थी तथा महिलाओं को जागृत करने का प्रयास किया। परिणामस्वरूप म्ध्यप्रदेश में महिला उत्थान का मार्ग प्रशस्त होने लगा।

सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण –

म्ध्यप्रदेश का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश प्रारंभ से ही अति विशिष्ट रहा है। सामाजिक जीवन में जहॉ एक ओर सामाजिक समरसता दृष्टिगोचर होती है, तो दूसरी ओर लोगों की आर्थिक आवश्यकताएं भी न्यूनतम रही। समाज में जातिभेद के बावजूद जातीय तथा धार्मिक संर्कीणता नही थी। इसी प्रकार आर्थिक जीवन मुख्यतः कृषि एवं वनों पर आधारित रहा है। म्ध्यप्रदेश का सामाजिक इतिहास अत्यन्त प्राचीन है, जो कई संस्कृतियों के समन्वय का प्रतिरूप है। म्ध्यप्रदेश की भौगोलिक सीमा और सांस्कृतिक परिधि ने यहाँ निवासियों को एक सूत्र में बांध कर रखा है। अनेक वर्षो की राजनीतिक उथल–पुथल तथा ऐतिहासिक और राजनीतिक परिवर्तनों के बाद भी म्ध्यप्रदेश अपनी अनेक प्राचीन परम्पराओं को कम से कम जीवित रख सका। इसका कारण यही था कि, जिन राजवंशों ने यहां शासन किया, उन्होंने कोई विदेशी या विजातीय प्रथा यहां पर नहीं लादी। वे स्वयं इसी भूमि के होकर रहे। आर्यों एवं अनार्यों की शासन व्यवस्था ही यहां प्रचलित रही, जिनके अवशेष अभी तक यहॉ दिखाई पड़ते है। यह प्रांतआर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल है। इनकी गहरी जड़े ब्रिटिश शासन काल की पराधीनता में ही उन्मूलित नही की जा सकी। आर्य अनार्य परम्पराओं का जो समन्वयात्मक संगठन यहॉ होता रहा, उसे विश्रृंखलित करने का प्रयास कभी किसी ने नही किया। यहाँ की जनजातियों का सामाजिक जीवन स्वतः अपने आप में पूर्ण रहा। भौगोलिक कारणों से आरण्यक जातियों का इस क्षेत्र में बहूल्य रहा। यहाँ की आरण्य जातियॉ सीदी–सादी, निष्कपट और अकृत्रिम जीवन पद्धति को लेकर चलने वाली थी। इनकी सभ्यता उत्तर और दक्षिण की संस्कारशील, शिष्ट और मर्यादित सभ्यता से अलग थी।लोकजीवन के सहज, स्वाभाविक और आडम्बरहीन कार्यकलापों का यहां की स्थानीय संस्कृति पर गहरा प्रभाव था।

म्ध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण का प्रादुभाव हुआ ब्रिटिश शासनकाल में नई प्रशासनिक व्यवस्था, पश्चिमी शिक्षा का विकास, आधुनिक यातायात के साधनों का विकास आदि से म्ध्यप्रदेश के लोंगो का बाहरी क्षेत्रों से सम्पर्क स्थापित होने लगा। इस सम्पर्क से यहां सामाजिक परिवर्तन परिलक्षित होने लगे समाज में महिलाओं की स्थिति में भी सुधार दिखाई देने लगा। 1920 में गांधी जी के संम्पर्क में आने के पश्चात् तथा उनके नेतृत्व में चले राष्ट्रीय आन्दोलनों के फलस्वरूप म्ध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण मूर्त रूप लेने लगा। इस प्रकार महिला सशक्तिकरण की दिशा में आधुनिक काल में हुए सामाजिक परिवर्तनों की प्रमुख भूमिका रही।

सामाजिक क्षेत्र के समान ही आर्थिक क्षेत्र में महिलाओं का सशक्तिकरण हो रहा था। म्ध्यप्रदेश की महिलाएॅ आर्थिक क्षेत्र में किसी न किसी रूप में अपना योगदान देती रही है। वे पुरूषों को कृषि कार्यो में सहायता देती रही है। इसके अलावा वे घर में कपड़ा बुनना, मिट्टी के बर्तन बनाना, बांस की वस्तुएँ जैसे टोकरियॉ आदि बनाना तथा अन्न कूटना–पीसना आदि कार्य भी करती ळें

उपसंहारः–

उपरोक्त विवरण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि म्ध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए गांधी जी का महत्वपूर्ण योगदान था। गांधी जी की दो बार म्ध्यप्रदेश यात्रा से महिलाएं राजनीतिक रूप से जागृत होने लगीं। म्ध्यप्रदेश के अनेक

गांधीवादी नेताओं के प्रयासों से सामाजिक सुधार किये जाने लगे तथा महिला शिक्षा को प्रोत्साहन दिया गया। इतना ही नही ब्रिटिश शासनकाल में हो रहे समाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों का महिलाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार म्ध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त होता गया। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि म्ध्यप्रदेश सहित भारतीय महिलाओं के उत्थान में महात्मा गांधी का योगदान आधुनिक भारतीय इतिहास की एक गौरवशाली गाथा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

ठा. भा. नायक (स.) म्ध्यप्रदेश में गांधी, पृ. 1

सुधीर सक्सेना ऐसे आये गांधी, पृ. 25

अरविंद शर्मा, म्ध्यप्रदेश का राजनीतिक इतिहास, पृ.–103

सुधीर सक्सेना, पूर्वोद्धृत, पृ. 40

अरविंद शर्मा पूर्वोद्धृत, पृ. 140

सुधीर सक्सेना, पृ. 41–42

सुरेश चन्द्र शुक्ला/ अर्चना शुक्ला म्ध्यप्रदेश का समग्र इतिहास पृ. 78

सुधीर चन्द्र सक्सेना पूर्वोद्धृत पृ.–31

ठा. भा. नायक, पूर्वोद्धृत,पृ –2 में उद्धृत

कर्मवीर खंडवा, 02 दिसम्बर 1933, पृ–2

उरोक्त पृ. 03

मध्यप्रदेश और गांधी जी (गांधी शताब्दी समारोह समिति के लिए सूचना तथा संचालनालय द्वारा प्रकाशित) अक्टूबर 1969, पृ. 29

अरविंद शर्मा पूर्वोद्धृत पृ. 198

मध्यप्रदेश संदेश, 25 सितंबर 1987 पृ. – 11

मध्यप्रदेश और गांधी जी, पूर्वोद्धृत, पृ. – 31

उपरोक्त, पृ. 32

आशा रानी व्होरा, महिलायें और स्वराज्य पृ. 127

राधा कुमार, स्त्री संघर्ष का इतिहास, पृ. 128

विजय एग्न्यू वुमैन इन इंडियन पालिटिक्स, पृ. 36

सुधीर सक्सेना, पूर्वोद्धृत पृ. 31

शोभाराम देवांगन, धमतरी तहसील में स्वतंत्रता आन्दोलन पृ.–41

रेणुका झा, रायपुर जिले में स्वाधीनता आन्दोलन (अप्रकाशित शोध प्रबंन्ध), पृ – 155

ठा. भा. नायक, पूर्वोद्धृत पृ.–04

रमेन्द्रनाथ मिश्र एवं लक्ष्मीधर झा, म्ध्यप्रदेश का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, पृ–227

संध्या तिवारी म्ध्यप्रदेश में सामाजिक सांस्कृतिक संचेतना के संवाहक पं. सुन्दरलाल शर्मा (अप्रकाशित शोध प्रबन्ध)

बाबू मावली प्रसाद श्रीवास्तव स्वर्गीय लाखे जी, नवज्योति, पृ–18

वंदना देशमुख बीसवीं शताब्दी में नारी मुक्ति (म्ध्यप्रदेश के विशेष सन्दर्भ में) (अप्रकाशित शोध प्रबंध), पृ. 93–94

कमल किशोर पाण्डे म्ध्यप्रदेश में समाजिक सांस्कृतिक एवं आर्थिक उन्नयन के प्रेणता – श्री वामनराव लाखे, पृ. 74 (अप्रकाशित शोध प्रबंध)

उपरोक्त

हरि ठाकुर, त्यागमूर्ति ठाकुर प्यारेलाल सिंह की जीवनी पृ. 08

आर्य सेवक, (आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ का मासिक पत्र) फरवरी 1970, आर्य शिक्षण संस्था विशेषांक, पृ. 11

उपरोक्त, मार्च –अप्रैल 1994 आर्य शिक्षण संस्था विशेषांक, पृ. 41

Corresponding Author

Sangeeta*

Research Scholar, SSSUTMS University, Madhya Pradesh

E-Mail – chintuman2004@gmail.com